DR MINTO (HINDI) 59

(12) 59-64

22

# अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में अभिव्यक्त मुस्लिम महिला जीवन

[illegible] मिश्र
[illegible] प्रो0 हिन्दी
[illegible] रा0 म0 स्ना0 महा0
[illegible], गौतमबुद्धनगर।

डॉ0 मनीष वर्मा
पोस्ट डॉक्टरेट फैलो0
चौ0 चा0 सिं0 वि0वि0
मेरठ

## शोध - सारांश

वैवाहिक जीवन में कभी -कभी ऐसे अवसर आ जाते हैं जब पति -पत्नी का एक साथ रहना कठिन हो जाता है। किन्तु कोई भी समाज इस रिश्ते को [illegible] की अनुमति नहीं देता। 18वीं शताब्दी में यूरोपीय समाज में जब विवाह [illegible] का विधान किया तो इसे पुराने सम्बन्धों से मुक्त होने के लिए एक [illegible] कदम मानकर स्त्री समाज की विजय बताया गया लेकिन मुस्लिम [illegible] ने छठी शताब्दी में ही विवाह विच्छेद का विधान किया था लेकिन आज [illegible] आम व्यक्ति कई बार तलाक को अपनी स्वच्छन्दता के लिए भी [illegible] में लाता है। वर्तमान समय में तीन तलाक का मुद्दा काफी सुर्खियों [illegible] एक गम्भीर विचारणीय विषय भी। तीन तलाक स्वय में कई बड़े [illegible] करता है। जिसमें मूलभूत प्रश्न जैसे - 'इसका हल क्या निकलेगा [illegible] महिलाओं को उनका सही हक आखिर कब मिलेगा' आदि शामिल [illegible] तलाक सिर्फ मुस्लिम समुदाय से जुड़ा प्रश्न नहीं है अपितु महिलाओं [illegible] और उनके हक से जुड़ा विषय है जिससे लम्बे समय से मुस्लिम [illegible] जुड़ रही है।